18 / 01 / 82 की अव्यक्त वाणी

पर आधारित योग अनुभूति

सदा के लिए अपनी कमजोरियों को विदाई देकर बधाई का अनुभव करना

➢➢ संगम युग पर, विशेष पार्ट धारी मैं विशेष आत्मा...

➳ _ ➳ अपने आकारी रूप में, कल्याण कारी बाप के सम्मुख...

→ देहाभिमान रुपी रावण को...

→ उसके सम्पूर्ण वंश,

→ उसके रॉयल रूपों और

→ पांच विकार सहित...

→ जलाने की दृढ प्रतिज्ञा करती हुई...

→ ये पांच विकार हैं -

- काम,
- क्रोध,
- लोभ,
- मोह और
- अहंकार...

→ इनके स्थूल रूप पर विजय पाने वाली मैं आत्मा...

→ मन ही मन सूक्ष्म चेकिंग कर रही हूँ इनके रॉयल रूपों की...

- मन में किसी आत्मा के प्रति विशेष स्नेह हैं, तो...

→ काम का रॉयल रूप हैं...

- मेरी आवश्यकताये बेहद में हैं, तो ...

→ लोभ का रॉयल रूप हैं...

- किसी के स्वभाव संस्कार को देख किनारा करती हूँ, तो...

→ क्रोध का रॉयल रूप हैं...

- बाप की दी विशेषताओं को “मेरी” कहती हूँ, तो...

→ अहंकार का रॉयल रूप हैं...

- हद में कोई वस्तु या व्यक्ति अच्छे लगे, तो...

→ मोह का रॉयल रूप हैं...

➳ _ ➳ मैं आत्मा अपने अलौकिक जन्म की विशेषताओं मनन करती हुई,

→ मेरा कुल देवताओं से भी ऊँच है...

→ मेरा भाग्य लिखने की कलम अब मेरे हाथ में हैं...

→ मैं मास्टर सर्वशक्तिमान आत्मा, अपने भाग्य के नशे में चूर...

- बाप दादा की आँखों की रूहानी सी कशिश..
- मुझे स्वयं में डुबोती जा रही हैं...
- हवा में उड़ते बुलबुलें के समान हल्की होकर...

➳ _ ➳ मैं आत्मा उड रही हूं सूक्ष्म वतन की ओर...

➳ _ ➳ प्रकाश के उडन खटोले में बैठ कर...

→ मैं आत्मा, फरिश्तो के लोक में...

→ सामने दूर तक फैली हुई धवल चांदनी का विस्तार...

→ और बाहें पसारे खड़े है, मेरे बाप दादा...

→ रोम- रोम से टपकता पावनता का नूर....

→ इर्द-गिर्द पावनता का सागर फ़ैल गया है...

- इस सागर में डूबती हुई, मैं आत्मा,
- पावन होती जा रही हूँ...

→ कमजोरियों की सारी कलुषिता धुल रही हैं...

➳ _ ➳ हीरे की तरह झिलमिलाती मैं आत्मा, अब परमधाम में...

→ शिवपिता की किरणों के नीचे...

→ स्वयं को शक्तियों से भरपूर करते हुए...

→ शक्ति स्वरूप मैं आत्मा अब लौट चली हूँ,

→ अपनी स्थूल देह की ओर...

- मन में हर आत्मा के प्रति बेहद का स्नेह लिए
- सभी आवश्यकताए हद में सिमट गयी है...
- मैं विशेष आत्मा केवल विशेषता देखने की अभ्यासी...

- अपनी विशेषताओं के प्रति निमित्त भाव लिए...
- अब केवल बाबा ही मेरा संसार है...
- मैं पूरी तरह नष्टो मोहा आत्मा...
- सदा के लिए अपनी कमजोरियों को विदाई दे...
- बधाई का अनुभव कर रही हूँ ...